(**एक अनजान लड़की की खिलती जवानी की कहानी**)

लेखक - भोपाली

'हाय देवर जी, पहले हमको चोदो ना, माया अभी देखकर चोदवाने के लिए बेहाल हो जाएगी।'
मैं उस वक्त माया को चोदना चाहता था। माया तथा भाभी पहले से ही
एक दूसरे की बूर को चाट-चाट कर मज़ा ले रहीं थीं तभी मैं उसी वक्त वहाँ प्रकट हो गया था।
माया को चोदूँ यही मेरी तमन्ना थी पर पहले मुझे भाभी को ही चोदना पड़ा।
तब माया हमें चोदते देख रही थी। वह हमारी चुदाई देख मस्त हो गई और फिर ...

* * *

माया की तस्वीर देखकर मैं बस दीवाना हो गया था और भाभी तो यही चाहती थी। वह मुस्कुरा कर बोली, 'चाहिए क्या अमित?'

'हाँ भाभी, चाहिए। अगर ये मिल जाती है हमें तो फिर मत कहिए .. आपकी हर गलती को माफ़ी मिल जाएगी। मैं आपके विषय में ना भैया से कुछ कहूँगा और न ही मम्मी-पापा से।'

'सच कह रहे हो अमित?'

'हाँ भाभी, आपको क़सम खा कर कह रहा हूँ।'

'तो ये तस्वीर और निगेटिव हमें वापस दे दो।'

'दे दूँगा भाभी। अगर अभी मैं दे दूँगा तो फिर मेरे पास हथियार क्या बचेगा भाभी?'

'हाँ ये बात तो तुम ठीक कहते हो अमित लेकिन इस बात से तो यह भी साफ़ ज़ाहिर होता है ना कि तुम्हें मेरे ऊपर अब विश्वास नहीं रहा है, क्यों?'

'भाभी, विश्वास और वो भी इस जमाने में? जो लोग करते हैं वो पछताते हैं।'

'ये कैसे कह सकते हो तुम?'

'भाभी अगर ये बात भैया को पता चल जाए कि आप चुदवाती थीं उनकी गैर-हाजरी में तो उन्हें कैसा लगेगा? ये भी तो उनका विश्वास ही था जिसे आपने चूर कर दिया।'

तब भाभी का चेहरा एकदम से मुरझा गया था। वो बोली, 'अब मेरे पास कहने को क्या है?'

इस पर मैं मुस्कुरा पड़ा।

'हँस लो, अगर इतना ही हँसने का दिल है तुम्हारा। औरत पाप करती है तो पाप है मगर यही मर्द करता है तो कुछ भी नहीं, क्यों?'

'भाभी आप ही सोचो कि अगर भैया आपके जानकारी में कुछ करते हैं तो?'

'तो क्या, वो तो मर्द हैं और वो पंडित हैं क्या? बोलो, वो नहीं करते हैं क्या? नहीं किए हैं कुछ भी अब तक?'

'अब मुझे तो इस बात की जानकारी नहीं है ना भाभी।'

'ठीक है, मैं माया को बुला कर तुम्हें दूँगी, बस यही चाहते हो ना तुम।'

'हाय भाभी, प्लीज आप नाराज़ मत हो।'

'इसमें नाराज़ होने की क्या बात है।' इतना कह कर भाभी अपने कमरे में चलीं गई थी और फिर एक घंटे बाद वह स्वयं ही मेरे पास आई और बोली, 'ठीक है अमित, मैं तो माया को बुला दूँगी। क्या तुम उसे चोदोगे?'

'हाँ भाभी, यही तो मैं चाहता हूँ।'

'तो मुझे क्या हासिल होगा?'

'आपको क्या हासिल होगा से आपका मतलब?'

'देखो, यही तो मैं जानना चाहती हूँ। तुम माया को चोदोगे और मैं क्या अपनी बुर में उँगली डालूँगी उसके बाद?'

'नहीं भाभी, मैं हूँ ना।'

'हाँ तो क्या हुआ?'

'देखो भाभी, मेरे पास तो एक ही लंड है। पहले उसे या पहले आप मुझसे चुदवा लो, बस।'

'ये ठीक कहा तुमने अमित, थैंक्यू।'

फिर वह मुझे देखने लगी थी और उसके हाव-भाव से मुझे समझ में आ रहा था कि शायद वह खुद ही चोदवाने के चक्कर में है। तभी मैंने उनसे पूछ ही लिया कि, 'भाभी, आप क्या सोच रही हैं?'

'अमित, मैं तो बहुत खुश हूँ ...'

'हाँ, हाँ बोलो भाभी बोलो ना।'

'मैं खुश इसलिए हूँ कि हमें रवि को चोदने के लिए बुलाना पड़ता था। अब घर में ही मेरा यार है।'

'हाय भाभी, आपकी आँखें तो बहुत देर बाद खुलीं इस मामले में।'

'हाँ, मगर खुल तो गईं ना अब?'

'हाँ ये तो सच है कि एकदम से खुल गईं हैं। तो क्या सोच रही हो अब आप?'

'सोच रही हूँ कि तुम ये सब आख़िर जानते कैसे हो? मैं तो अब तक तुम्हें बच्चा ही समझती थी।'

'मुझे और बच्चा? भाभी, मर्द की जवानी कब आ जाती है पता ही नहीं चलता। देख कर तो सिर्फ़ औरत की जवानी का पता चलता है ना जब अनार फूट कर दुनिया के सामने आ जाता है।'

'हाँ अमित, तुम तो कह रहे थे कि तुम एक लड़की को चोद भी चुके हो। क्या तुम्हारा लंड चोदने के लायक हो चुका है? तुम्हारी उम्र क्या है इस वक्त?'

'भाभी मैं सत्रह वर्ष का हूँ और मेरा लंड आपको भी चोद कर मज़ा दे सकता है।'

'ऐसा लंड है तुम्हारा क्या?'

'हाँ भाभी, ऐसा ही है मेरा लंड।'

'तो दिखा दो ना मुझे...'

'नहीं भाभी। मेरी एक शर्त पहले सुनो और ये शर्त आपको हर हाल में माननी ही होगी।'

'कहो देवर जी, क्या शर्त है?'

'पहले आप हमें माया की चुदाई करवा दो फिर आपका ही हूँ मैं।'

'यानी कि पहले तुम हमें नहीं चोदने वाले हो, यही ना?'

'हाँ भाभी, यही बात है।'

'फिर ठीक है, तुम बुर के लिए इंतज़ार करो।'

इतना बोलकर वह वहाँ से उठ गई थी। मैं भी जानता था कि अगर मैं भाभी को एक बार भी चोद देता हूँ तो वह मेरे लंड की दीवानी हो जाएगी और फिर माया के लिए मैं तरसता ही रह जाऊँगा।

मैं बड़े ही आराम के साथ बैठा था और सोच रहा था।

दरअसल माया मेरे ही बग़ल में रहने वाली एक लड़की थी। मेरी भाभी रवि के साथ फँस गई थी और रवि आए दिन मेरी भाभी को चोदता था। एक दिन मैंने उनकी चुदाई के दृश्य का फ़ोटो खींच लिया और फिर उसी दिन से भाभी मेरे बस में आ गई थी।

इसी तरह से हमारा काम चल रहा था। माया रवि की बहन थी। वो भी अपने नानी के घर पिछले कुछ दिनों से आई हुई थी। भाभी की दोस्ती माया से थी और उसी के चलते रवि ने भाभी की बुर में मची खुजली भाँप ली थी। दोनों के बीच चोरी-छुपे चल पड़े खेल को मैंने पकड़ ही लिया था।

आज तीसरा दिन था जब मैंने कॉलेज जाना ही बंद कर रखा था और घर पर ही था जब भाभी ने बताया कि उसने आज माया को बुलाया है। मैं माया के आने का इंतज़ार करने लगा। भाभी उस वक्त चादर ओढ़े थी। वो ऐसी नाइटी पहन कर लेटी थी जिससे काली काली पैंटी और ब्रा साफ़-साफ़ दिखे। मैं मन ही मन खुश था।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। भाभी ने अपने कमरे के अंदर से ही आवाज़ लगाई, 'कौन है?'

दरवाज़े के बाहर से एक लड़की की आवाज़ ने जवाब दिया, 'भाभी मैं हूँ, माया।'

भाभी बोली, 'ठहरो, अभी आ कर दरवाज़ा खोलती हो।' फिर उन्होंने मुझसे कहा, 'देखो, माया आ गई है। फ़िलहाल तुम कहीं छिप जाओ। उसे ये पता नहीं चले कि तुम घर पर ही हो नहीं तो मेरा प्लान गड़बड़ा जाएगा।'

'ठीक है भाभी, मैं अपने कमरे में चला जाता हूँ। आप उसे उधर मत लाना।'

'ठीक है, तुम कमरा अंदर से बंद कर लो।'

'बंद कर लो नहीं भाभी, ये लो ताला और चाभी और इससे मेरा कमरा बाहर से ही बंद कर दो। उसे लगेगा मैं सचमुच ही घर में नहीं हूँ।'

भाभी ने वैसा ही किया।

मैं अब अपने कमरे में बैठा था। मैंने टेबुल को पलंग के ऊपर लगा दिया था और कैमरा तैयार करने लगा। मैं फ़ोटो लेना चाहता था जिससे कि माया की जवानी को अपने बस में कर सकूँ।

मैंने माया के बारे में तो केवल सुना था, देखा तो बस उसका फ़ोटो ही था। उसे नज़दीक से देखने और फिर चोदने को मैं छटपटा रहा था। मन में सिर्फ़ यही विचार दौड़ रहे थे कि माया मेरे पास आ जाए और मैं उसे ज़ोर से चोदूँ।

तभी मैंने दोनों की चप्पलों की आवाज़ सुनी।

'भाभी, ये आपने क्या पहन रखा है?'

'ये तो नाइटी है, माया।'

'छीः ये कैसी नाइटी है जिससे आपका सारा बदन बिल्कुल साफ़ दिख रहा है? ये क्यों पहनी है?'

'तुम्हें दिखाने के लिए।'

'मुझे दिखाने के लिए?' वह उचक कर बोली।

'हाँ, और नहीं तो क्या?'

'मैं देखकर क्या करूँगी भाभी, मैं लड़का थोड़े ही हूँ।'

'क्यों, लड़की लड़की को नहीं दिखाती क्या?'

'क्या फ़ायदा?'

'सचमुच कोई फ़ायदा नहीं होता है?'

'नहीं भाभी, कोई फ़ायदा नहीं होता है।'

'हाय, तुम झूठ बोल रही हो माया। क्या मेरी जवानी और मेरा शरीर तुम्हें पसंद नहीं आ रहे हैं?'

'हाँ, पसंद तो हैं। आप बहुत सुंदर हैं भाभी।'

'सच कह रही हो?'

'हाँ भाभी, सचमुच।' वो अपने कंठ को पकड़ कर बोली, 'मैं तो तुमसे कम ही हूँ।'

कमरे के अंदर से मैं तो अभी केवल आवाज़ ही सुन पा रहा था। तभी माया आगे बोली,

'आपको अच्छा लगता है इसे पहनना क्या भाभी?'

'नहीं तो, ये तो मैं कभी-कभी ही पहनती हूँ।'

'कब पहनतीं हैं इसे आप?'

'अधिकतर तब जब मेरा मन चुदवाने का होता है और मेरा पति चोदने के मूड में ना हो तो।'

'धत भाभी, आप भी कितनी अजीब हो।'

'देखो माया, मैं एक शादी-शुदा हूँ और मैं तो अपने पति से चुदवाए बग़ैर नहीं रह सकती।'

'ज़रूरी थोड़े ही ये सब ...'

'चुदवाना...?'

'धत भाभी, आप कैसे बोल लेतीं हैं ये सब?'

'अरे बोलने में क्या है।'

'क्या है मतलब? आपको बोलने में शर्म नहीं आती है क्या?'

'शर्म क्यों आएगी?'

'कैसे बोल लेती हो आप, हम से तो सच में भाभी बोला भी नहीं जाएगा।'

'कब बोला जाएगा ये मैं तुम्हें बता दूँ क्या?'

'हाँ हाँ, बताओ?'

'जब किसी मर्द से एक बार चुदवा लोगी ना, तब।'

'धत भाभी।'

'चुदवा दूँ क्या? कहोगी तो चुदवा भी दूँगी।'

'भाभी, तुम भी अजीब बात करती हो।'

'देखो माया, तुम मेरी ननद हो ना, तो हम से क्या शर्म?'

'हमें तो शर्म आती है भाभी इस तरह की बातें करने में।'

'भई हमें तो नहीं आती। मैं तो चुदवाने में भी शर्म नहीं करती। कपड़े खोलकर अपने पति के पास नंगी लेट जाती हूँ। उसके बाद वो जाएँगे कहाँ? नंगी बुर और नंगी चूचियों को देखकर वो तो पागल हो जाते हैं और फिर बेचैन हो कर मेरे पास दम तोड़ देते हैं।'

'हाय भाभी, आपकी बात सुनकर तो मेरा रोम-रोम काँप उठा है।'

'चलो माया मेरे कमरे में। मैं चाय लेकर आती हूँ।'

माया भाभी के कमरे में आकर बैठ गई और भाभी किचेन में चली गई। मैं रोशनदान से आज पहली बार माया को सामने देख रहा था। सच, वह एक जानदार चीज़ थी। उसकी मस्त जवानी को देख मैं ललचा उठा था। मेरी आँखें मिचमिचा रहीं थीं। हाय, माया तो सचमुच जवानी की तोप से कम न थी। उसके रोए-रोए से जवानी मानो फूट रही थी।

लंबी क़द-काठी, मस्त चाल, उठी हुई नाक, लाल-लाल होंठ, ठुमकेदार नुकीली चूचियाँ, बेंत जैसी पतली कमर। वो सच में काफ़ी अच्छी लग रही थी उस समय। वह अपनी चोटियों को अपने गांड के ऊपर हिला रही थी और वो चोटियाँ उसके चूतड़ों को बार-बार चूम रहीं थीं। मेरी नज़र उसकी लंबी गर्दन और कानों के कुंडल को देख और मचल गई। उसके फूले-फूले जवानी के रस से भरे गाल को चूमने को जी ललच गया।

वह आईने के सामने खड़ी थी और अपने-आप को बार-बार निहार रही थी। मैं उसकी जवानी और मतवालापन देखकर गद्‌गद हो गया था। मैं जानता था कि लड़कियों को ये नशा कब छाता है और लड़कियाँ कब दीवानी होती हैं। हाय .. वैसे भी आजकल लड़कियों की मस्त मस्त जवानी को देखकर मन मेरा बेक़ाबू हो जाता था और इस हाल में तो हाय क्या कहना!

माया अपने आप को निहार रही थी और उसकी इस हरकत से काफ़ी कुछ आईने की तरह ही साफ़ हो गया था। कोई लड़की ऐसा तब करती है जब उसके मन में चुदवाने की इच्छा प्रबल होने लगती है। और इधर भाभी तो उसे इस कदर लगी आग में ढकेलने के लिए आने ही वाली थी। मैं भाभी को भी नंगा देख चुका था पर उन्हें खुद कभी नंगा करके नहीं देखा था। हाय मेरी भाभी, तुम खुद भी तो जानदार हो पर अब जल्दी से आती क्यों नहीं हो ... मैं मन ही मन भाभी से इस तरह की प्रार्थना कर रहा था कि भाभी कमरे में आ गईं।

माया को इस तरह आईने में अपना शरीर निहारते देख उन्होंने अपनी कमर पर हाथ रख कहा, 'हाय, जवानी बाहर आ रही है ना माया?'

'हाय भाभी, आप भी तो एक औरत हैं ...'

भाभी अपनी पलंग पर बैठ गई और माया की चोटी को पकड़कर अपनी तरफ़ तान दीं।

'उफ्फ माँ, हट भाभी।'

'अरे आ जा मेरी जान, आ।'

'भाभी, दुखा दी ना मेरी .. हाय ..' वह अपनी रोनी सी सूरत को बना कर बोली थी।

'अच्छा सुन तो सही, चल आजा इधर ...'

तब माया आईने के सामने से हटी और भाभी की बग़ल में आकर बैठ गई। मैंने कैमरे को तैयार रखा था और सोच रहा था कि यदि टेपरिकार्डर भी होता तो इन दोनों की बातें रिकार्ड कर लेता और बाद में बार-बार सुनता। मैं था चालू और कैमरे के साथ सही तस्वीर के इंतज़ार में खड़ा रहा।

पर अभी वो वक्त नहीं आया था क्योंकि अभी तो माया चुपचाप बैठी थी और भाभी चित पड़ी थी।

'बैठो ना ठीक से माया।'

'ठीक है भाभी।'

'और तो कोई काम बाक़ी नहीं है तुम्हें अपने घर पर?'

'नहीं, सारे ख़त्म करके आई हूँ, इत्मिनान से।'

'तो मेरे पास आओ ना, कब तक बैठी रहोगी?'

'ओके भाभी' कह कर माया उठी और घुटने का बल लेकर आराम से भाभी के पास लेट गई।

'अब बताओ भाभी क्या ठीक है ना' वह भाभी को निहारती हुई बोली।

'हाँ, ठीक है,' भाभी बोली। फिर उन्होंने कहा, 'तुम बार-बार मेरी नाइटी को ही क्यों देख रही हो? चाहिए क्या ये नाइटी?'

'मैं क्या करूँगी?'

'पहनना, और क्या?'

'मुझे नहीं पहनना ऐसे कपड़े।'

'क्यों नहीं मेरी जान। ऐसे कपड़े ख़राब होते हैं क्या?'

'क्या आपको ऐसे कपड़े पहन कर घर में रहना अच्छा लगता है?'

'मुझे अच्छा लगे या ना लगे, मेरे पति देव को तो अच्छा लगता है ना।'

'और भाभी कहीं इस कपड़े में अमित ने आपको देख लिया तो?'

'तो भी कोई बात नहीं है, बस सास-ससुर को नहीं दिखना चाहिए।'

'और वो लोग देख लिए तो...'

'मैं क्या पागल हूँ तो उन्हें पहनकर दिखाऊँगी। मैं क्यों उनके सामने जाऊँगी ऐसे कपड़ों में?'

'पर पति के सामने तो जाती होंगी ना?'

'लो, जो ख़रीदकर लाया है पहनने के लिए उनके सामने क्यों नहीं जाऊँगी?'

'यानी जय भैया ख़रीद कर लाए हैं ये आपके लिए...'

'हाँ, वही तो ख़रीद कर लाए हैं।'

'क्यों?'

'जब शादी हो जाएगी तेरी तो सब समझ में आ जाएगा।'

'हाय, आप तो भाभी हैं। पहले ही समझा दीजिए ना ये सब।'

'समझना चाहती हो?'

'और नहीं तो क्या, बताओ ना भाभी।'

'दरअसल मेरे पतिदेव हैं ना, वो हमें रात को हमेशा नंगा ही देखना चाहते हैं और चाहते हैं कि मैं उनके साथ नंगी ही सोऊँ। मैंने पहले ये सब कभी किया तो था नहीं इसलिए नंगी सोने में मुझे नींद ही आती कभी। हर रात नंगी होते होते मैंने सीख लिया कि जब वो सो जाएँ तभी मैं झट से कपड़े वापस पहन लेती और फिर मुझे नींद आ जाती। बस इसी तरह से होता था। समय गुज़रता गया। आठ-दस दिन ही बीते थे शादी के कि ये इस नाइटी को ख़रीद लाए। मैं इसे पहन कर रोज़ सो ज़ाया करती थी। तब हमें लगता था कि हमने तो कपड़े पहन ही रखें हैं।'

'पर भाभी आपने एक बात तो बताई ही नहीं।'

'यही कि वो आपको रोज़ नंगा ही क्यों सुलाते थे?'

'धत पगली, नंगा न सुलाते तो हर रात पाँच-छः बार कैसे चोदते? और ये तो अच्छा ही हुआ कि ....'

'हाँ ... हाँ ... क्या भाभी?'

'वो सर्विस भी करते हैं वर्ना दिन में भी छह बार ज़रूर चोद लेते और इस तरह से दर्जन पूरा कर देते।'

'और आप चुदवा लेतीं दर्जन बार .. ?'

'हाँ, क्यों नहीं?'

'आप कैसे चुदवा लेतीं?'

'अरे मुझे कुछ करना थोड़े ही पड़ता, मुझे तो बस पड़े रहना होता है। चोदते तो वही थे। यानी थकान उन्हीं को होना था ना ..'

'वाह भाभी, मतलब ये कि औरत को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है?'

'बिल्कुल नहीं।'

'ये कैसे कह सकती हो भाभी?'

'देख भई, हमें तो फ़र्क़ नहीं पड़ा था, इसलिए मैं अपने बारे में कह सकती हूँ और क्या?'

'हाय भाभी ... आप झूठ बोल रही हैं।'

'क्या मतलब तेरा? ये बात झूठ तभी हो सकती है जबकि तुम चुदवा चुकी होगी और तभी तुम्हें पता होगा।'

'धत भाभी, तुम कैसी कैसी बातें करती हो?'

'क्यों क्या नहीं चुदवाई हो आज तक?'

माया शर्मा कर अपना कंठ पकड़ते हुए बोली, 'नहीं भाभी।'

'चलो मान लेती हूँ पर एक बात तो अवश्य ही होगी ...'

'क्या भाभी?'

'यही की अब मन तो करता ही होगा, क्यों?'

'नहीं, मेरा मन इस चुदाई-वुदाई के लिए नहीं करता है।'

'तो फिर ...'

'भाभी मेरा भी एक प्रेमी है जिसका नाम विकास है। मैट्रिक में हम दोनों साथ ही पढ़ा करते थे। कुछ दिनों पहले की ही बात है, मेरे घर वालों को ये सब पता चल गया। तो हमें अलग करने के लिए ही मुझे यहाँ नानी के घर भेज दिया गया।'

'कैसे हुआ ये?'

'बस भाभी देखा-देखी में ही हमें उससे प्यार हो गया है। यही मन करता है कि मैं उसे देखूँ।'

'भूल जाओ तो ही अच्छा है।'

'पर क्यों भाभी?'

'बचपन के प्यार का कोई मूल्य नहीं होता है माया।'

'क्या कह रही हो आप भाभी?'

'सच कह रही हूँ मैं माया।'

'पर विकास एक अच्छा लड़का है ...'

'क्या वो तुम्हें कमा कर खिला सकता है?'

'अभी उसकी उम्र ही नहीं है भाभी कमा कर खिलाने की।'

'जब वह कमा कर खिला ही नहीं सकता है तो फिर उसे प्यार करने का सचमुच कोई हक़ नहीं है।'

'भाभी, आप ये क्यूँ कह रही हैं?'

'हाँ पगली, जीवन इतना आसान सा नहीं है जो तुम सोच रही हो। जीवन में पति के प्यार के साथ-साथ सब-कुछ ज़रूरी होता है। सिर्फ़ प्यार से पेट नहीं भरता है, बस मन भरता है। जब वही तुम्हें कल भूखा रखेगा तो क्या होगा? और प्यार का क्या है, वह तो जवानी में किसी से भी हो सकता है।'

'यानी भाभी, मैं विकास को भूल जाऊँ तो ही ठीक है।'

'हाँ, भूल जाओ और एक बात जान लो आज की तन की प्यास और मन की प्यास में अंतर होता है। अब सुनो मेरी बात और सच-सच जवाब देना ... क्या तुम्हें विकास से चुदवाने का मन नहीं करता है?'

'भाभी वो...'

'करता है ना?'

'हाँ, पर उससे क्या?'

'मन करता है तो चुदवा ले पर बस चुदवाने तक ही मतलब रखना, समझी?'

'यानी की अपना सब कुछ दे दूँ उसे?'

'तुम दे नहीं रही हो, तुम कुछ उससे ले रही हो।'

'वो कैसे?'

'वो ऐसे की तुम उससे चुदवा रही हो तो तुम्हें मज़ा नहीं आ रहा है क्या?'

'हाँ, वो तो है।'

'और साथ ही साथ वो तुम्हारा राजदार भी तो है। बात को छुपा कर रखेगा।'

'हाँ भाभी, ये भी ठीक है।'

'तो चुदवाना हो तो चुदवा लो, मज़ा लेना है यार, जीवन कभी नीरस नहीं जीना चाहिए। समझी क्या?'

'हाँ भाभी, समझी मैं।'

'तो क्या सोच रही हो?'

'सोचना क्या है भाभी, जब विकास से मिलूँगी तो मैं चुदवा सकती हूँ। पर आपने तो मेरी बताई, अपनी बताई ही नहीं।'

'मेरी क्या जानना चाहती हो?'

'सब कुछ जानना चाहती हूँ अगर बताना चाहें तो। जैसे कि आपने किस से प्यार किया था?'

'मैंने प्यार बड़े ही समझबूझ के साथ किया था।'

'वो कैसे भाभी?'

'जय, जो मेरे पति हैं ना, जब मेरे स्कूल में नए नए सर बनकर आए थे तो मैं उनके बारे में पता लगाई। तब मैं मैट्रिक पास कर चुकी थी। ये मेरी बहन अनिता को पढ़ाने के लिए मेरे घर आते थे। बस मैं उन्हें फँसाना चाहती थी और ये हम पर मर मिटे। फिर क्या था, हम दोनों में प्यार हो गया और अंत में शादी भी हो गई।'

'इसका मतलब आपने भी पहले प्यार किया और फिर शादी ...'

'हाँ, मगर ये तो जान गई थी कि मेरे पति कमाऊ थे पागल लड़की।'

'पर एक बात और भाभी ... क्या जय भैया शादी से पहले ही आपकी ... ?'

'तो तू चुदाई वाली बात जानना चाहती है?'

'हाँ भाभी, बताओ ना प्लीज।'

'जब वो मेरे से शादी की बात स्वीकार कर लिए तो हमें चोदने की ज़िद करने लगे थे। मैंने उन्हें छूट दे दी थी कि आप हमें प्यार करो, चुम्मा-चाटी और यहाँ तक की चूचियों से भी खेल सकते हो। पर वो इस तरह से मुझे प्यार किए कि मुझको पागल ही कर दिया और बहुत जल्दी मेरी बुर तक जा पहुँचे। मैं चुदाई से इन्कार नहीं कर पाई और सच बताऊँ तो मुझे बुर चुदवाना इतना अच्छा लगा कि उसके बाद मैं चुपके-चुपके अपनी बुर को उँगली से खोद-खोदकर चोदने लगी।

'मैं मस्ती में रहा करती थी क्योंकि वो तो रोज़ पढ़ाने आते ही थे। कुछ पल अकेले में मुझे बुला लेते थे और फिर गपागप चोद देते। मैं चुदवाकर उनके लंड से खुश थी। और एक दिन मैं ज़िद करने लगी कि हमें रात को रहा नहीं जाता है। उन्होंने पूछा कि तो वो क्या करें। मैंने तुरत कहा कि जल्दी से शादी कर लो। वो रुकने के लिए बोले पर मैं ना रुकी और जल्दी ही हमारी घर की ये मेलजोल शादी में बदल गई।'

'हाय भाभी, आप तो ग़ज़ब की चालाक हो, क्या तीर मारा पर मैं आप की बात को समझ गई हूँ। तो क्या आपकी शादी तुरंत ही हो गई?'

'हाँ मेरी शादी तो तुरंत ही हो गई और सुहागरात भी ...' और इतना बोल कर भाभी ने माया को अपने सीने से सटा लिया।

माया के गाल को वो चूमी तो माया ने अपनी आँखें बंद कर ली और बोली, 'हाय भाभी, मत करो ना...'

'क्या ना करूँ माया?'

'हाय, मैं तो पागल हो जाऊँगी ... ओह .. अब मत करो, मेरे अंदर भी कुछ कुछ होने लगता है।'

भाभी ने पूछा कि 'क्या होने लगता है?'

'पता नहीं भाभी ... बस .. आह .. मत करो ना .. हाय ...'

पर भाभी तो मेरी ग़ुलाम थी इन दिनों। वह माया की चूची सहलाई तो माया सिसक उठी थी। भाभी उसे प्यार किए जा रही थी और वह चढ़ कर माया की गाल को चूमने लगी। तभी मैंने सोचा कि हाय, मेरी हालत खराब है जबकि भाभी उसे प्यार कर रही है। जब मैं माया को प्यार करना शुरू करूँगा तो क्या हाल होगा उसका।

हाय, माया तो अब एकदम से मस्ती में सिसक रही थी। तभी भाभी उसे बाँहों में भर ली थी और माया ज़ोरों से सिसक उठी ...

'हाय भाभी, क्या कर दी तुम तो ... आह माँ ...'

माया अपनी टाँगों को आपस में रगड़ रगड़ कर सिसक रही थी। हाय, सच में उसका हाल एकदम से बेहाल था। उसके होठों को मेरी प्यारी भाभी इस तरह चूम रहीं थीं मानो उन्होंने माया को मदहोश करने की ठान ली हो। फिर एकाएक उन्होंने अपनी नाइटी को अपने बदन से खोल कर हटा दिया और सिर्फ़ ब्रा और पैंटी में आ गईं। माया चुपचाप भाभी को देख रही थी और वह समझने की कोशिश कर रही थी कि आखिर आगे क्या होने वाला है।

तभी भाभी ने माया के हाथों को पकड़ कर अपनी चूची पर रख कर बोली, 'हाय माया, मेरी चूचियों को अपने हाथों से दबाओ ना ... तुम क्या सोच रही हो?'

'भाभी आप ऐसे कर रही हैं तो हमें भी कुछ कुछ हो रहा है।'

'सब शांत हो जाएगा माया, सब ठीक हो जाएगा।'

'वाह, क्या ठीक होगा?'

'मैं तुम्हारी बुर की गर्मी भी शांत कर दूँगी माया।'

'वो कैसे भाभी?'

'धत पगली, आज के युग में औरत औरत से शादी कर रही है और तुम सोच में पड़ी हो .. '

'हाँ भाभी, ये बात तो मैंने भी सुनी है पर ठीक से मेरी समझ में नहीं आया कि कैसे एक औरत दूसरी से शादी करती है।'

'हाय माया, सब समझ में आ जाएगा तुम्हें, बस तुम अपने आप को मेरे हवाले कर दो।'

'हाय .. आपके हवाले कर तो चुकी हूँ ... पर ये तो बताओ ना कैसे वो लोग ...'

'मेरी माया, मैं अभी बताती हूँ पर जानती हो ना कि इसके लिए नंगी होना पड़ेगा।'

'नहीं भाभी, ये क्या कह रही हो?'

'अब मैं कोई मर्द हूँ जो हम से तुम शर्म कर रही हो।'

'मैं कभी भी नंगी नहीं हुई हूँ भाभी ... '

'तो आज हो जाओ ना!'

'हाय भाभी, तुम तो सच में मुझे नंगा करने लगी ...'

भाभी उसकी समीज़ के बटनों को धीरे-धीरे खोलने लगी थी और इधर माया सिसक रही थी और आहें भर रही थी।

'आह मज़ा आ रहा है, हाय, सचमुच कितना अच्छा लग रहा है भाभी!'

'हाय, कितना रस है माया तुम्हारी जवानी में, क़सम से ..' भाभी माया की समीज़ की बटनों को खोल चुकीं थीं और उसकी ब्रा के अंदर हाथ डाल कर चूचियों को मसल रही थी।

चूचियों पर हाथ के पड़ते ही माया सिसक उठी थी।

'आह भाभी, हाय ...' बोल कर माया अपने हाथों से दोनों चूचियों को पकड़ ली थी और सिसक रही थी।

भाभी ने उसके मुम्मों को दबाना सहलाना जारी रखा। उन दोनों की ही जवानी मेरे लिए अनजान थी। मैं चुपचाप रोशनदान से सब कुछ देखता रहा।

मैं इंतज़ार उस घड़ी का कर रहा था जब भाभी माया को पूरी तरह से नंगा कर देगी। तब माया की नंगी जवानी मेरे सामने होगी। हाय, वह पल तब कितना सुहाना होगा, ये सोचकर मैं रोमांचित हो रहा था। तभी मैंने भाभी को माया के ऊपर झुकते देखा। जैसे ही भाभी माया पर झुकी माया ने अपना हाथ भाभी की पीठ पर लाकर उनके ब्रा के हुक को खोल दिया। ब्रा के हुक खुलते ही भाभी की दोनों चूचियाँ आज़ाद पंछी की तरह फड़फड़ा उठी थी। हाय, मैंने तब अपनी आँखों को बंद कर लिया था।

माया ने अब बड़े ही आराम से भाभी की चूचियों पर से उनकी चोली को हटा दिया। वह जब चोली हटा दी तो भाभी की मस्त-मस्त दोनों चूचियों को मैं देखकर मस्त हो गया था। हाय मेरी भाभी, आपको तो मैं खुद चोदूँगा .. हाय, आपको चोदने को मेरा दिल सचमुच बेक़रार है।

ओह .. मैं बता नहीं सकता कि उस दृश्य को देखने में कितना मज़ा आ रहा था।

माया मेरी भाभी की दोनों चूचियों को मसल रही थी और अब भाभी भी सिसकने लगी। भाभी ने माया को छोड़ दिया था और अपनी चूचियों में फैलती उत्तेजना का मज़ा ले रही थी।

'हाय भाभी, आप भी मेरी चूचियों को प्यार करो ना ... आप तो एकदम से शांत हो गई हैं।'

माया की इस शिकायत पर भाभी ने उसकी समीज़ को पूरी तरह ऊपर उठा कर उसके हाथों से निकाल दिया। फिर उन्होंने बड़े ही ललक के साथ उसकी ब्रा भी खोल कर एक ओर फेंक दिया। माया की तन चुकी चूचियाँ अब एकाएक मेरी नज़रों के सामने थीं। काफ़ी बड़ी और नुकीली। उन्हें देखकर मेरा मन उतावला हो गया।

भाभी की चूचियों के निप्पल एकदम गुलाबी थे। मेरा मन तो पूरी तरह गद्‌गद हो गया। मैं इस दृश्य को झेल ही रहा था कि भाभी उठी और उसने अपनी पैंटी को खुद ही खोल कर नीचे खिसका दिया। फिर वह माया

की सलवार को भी खोल कर जब उसकी पैंटी नीचे करना शुरू की तो माया सिसक कर बोली,

'हाय भाभी, ये क्या कर रही हो आप?'

'पैंटी ही तो खोल रही हूँ, और क्या।'

'पर मेरी पैंटी को खोलकर तुम करोगी क्या भाभी?'

'बुर देखो और बुर दिखाओ।'

'हाय, इससे क्या होगा?'

'होगा ना, मैं तुम्हारी बुर को इतना मज़ा दूँगी कि तुम दीवानी हो जाओगी।'

'सच भाभी?' और ऐसा कह कर माया ने अपनी पैंटी खोलकर बिस्तर के एक किनारे रख दी।

मैंने देखा की माया के बुर पर बाल थे। भाभी तभी ठीक उलटी हो गई थी और वो कुछ पल तक माया की बुर देखती रही। मैं इधर उन दोनों की तस्वीरें ले रहा था। उनमें एक तस्वीर उस नंगी हो चुकी बुर की भी थी।

'हाय, मैं बहुत खुश हूँ। इतना खुश कि क्या कहूँ माया।'

'हाय भाभी, मैं भी।'

फिर भाभी ने माया को बताया कि, 'देखो, हमलोग एक दूसरे का मज़ा इस तरह लेंगे। मैं पहले ऐसे सोती हूँ जिससे मेरी चूचियों को तुम चूस सको और तुम्हारी चूचियों को मैं।'

माया ने सहमति जताई और फिर दोनों एक दूसरे की चूचियाँ लेटे-लेटे चूसने लगीं। दोनों ही मस्ती भरी अँगड़ाइयाँ ले रहीं थीं और एक-दूसरे को भरपूर प्यार कर रहीं थीं। मैं अपनी आँखें फाड़ फाड़ कर सब कुछ देख रहा था। चूचियों को काफ़ी चूस लेने के बाद भाभी माया की बुर की तरफ़ बढ़ चलीं। उन्होंने माया का चित लिटा कर उसकी बुर पर अपना मुँह लगा दिया। उनकी अपनी बुर अब माया के पास थी। दोनों एक-दूसरे की बुर को आहिस्ता आहिस्ता चूमने और चाटने लगीं।

भाभी ने कहा, 'माया, सच में बड़ा मज़ा आ रहा है तेरी कोरी बुर को चाटने में। मैं तो दीवानी हो गई इसकी।'

'हाय भाभी, बहुत मज़ा आ रहा है मुझे। आह्ह्ह .. आह्ह्ह ... हाय ऐसे ही और चाटो तब तक मैं आपकी बुर चाटती हूँ।'

इस काम-क्रीड़ा को देखकर मेरा लंड इतना मतवाला हो गया था कि मैं अपने आपे से बाहर हो रहा था। हाय, मैं इतना मस्त और गद्‌गद हो गया था कि पूरा शरीर उछलने लगा और फिर मेरे लिए बर्दास्त करना असंभव हो गया।

मैं सोचने लगा कि अब क्या करूँ? तभी मैंने सोचा कि दोनों ही तो पागल हैं इस वक्त। इन दोनों को ही आसानी से चोदा जा सकता है। हाय, मुझे चोदने में ग़ज़ब का मज़ा आएगा। मैंने आँखें बंद कर ग़ौर से सोचा तो ये ख़्याल भी आने लगा कि कहीं बीच में मेरे जाने से उन दोनों का बुरा तो नहीं लगेगा? क्या पता दोनों नाराज़ हो जाएँ?

पर ये तो सच है कि दोनों ही फिर मुझसे मज़ा लेकर चुदवाएँगी। सोच-सोच कर जल्दी से उतरने के चक्कर में पलंग और टेबुल की खड़खड़ाहट हुई और कमबख्त टेबुल ही उलट गया।

भाभी चौंक पड़ी थी और माया बोली, 'कहीं कुछ है तो नहीं ना भाभी? नहीं तो ये कैसी आवाज़ है?'

'आओ देखें तो बग़ल के कमरे में क्या हुआ ...' भाभी बोलीं, और फिर उन दोनों ने मिलकर मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला। मुझे देखते ही माया छुप गई थी पर भाभी बोली,

'तुम घर में ही थे क्या?'

'मैं तो अंदर सो रहा था। लगता है आपने ये देखे बिना ही मेरे कमरे का दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया था।'

तभी मैंने माया को जल्दी से अपने कपड़े पहनते देखा तो भाभी की नज़रें इशारे से माया की ओर कर दीं। भाभी ने माया से पूछा,

'ये क्या कर रही हो माया?'

माया कुछ नहीं बोली तो भाभी ने हम सब को अपने कमरे के अंदर चलने को कहा और फिर दरवाज़ा अंदर से बंद कर दिया। माया थोड़ी घबड़ा सी गई। वो भाभी से बोली,

'आपने मेरे साथ छल किया है भाभी।'

'छल कैसे माया?'

'आप तो कह रहीं थीं कि घर में कोई भी नहीं है।'

माया को ग़ुस्सा आ रहा था पर मैं तो माया की चूचियों को ही एकटक से देख रहा था। माया सिसक उठी थी और बोली,

'देखो अमित, प्लीज हमें मत देखो इस वक्त ... मैं ऐसी-वैसी लड़की नहीं हूँ।'

'पर तुम नंगी क्यों हो?' मैंने बनावटी आश्चर्य से पूछा।

'और मैं क्या करती ... हाय .. दूर रहो हमसे, छूना नहीं।'

'बुद्धू हो क्या माया?' भाभी ने कहा, 'जो चीज़ अधूरा होने वाला था अब तो अमित के आ जाने से पूरा हो जाएगा ना।'

माया ये सुनकर थोड़ी शांत हुई पर बोली, 'आप दोनों पहले से ही मिले हुए थे, मैं अब समझ गई हूँ।'

'नहीं पगली,' भाभी ने कहा, 'यक़ीन मानो, ऐसी कोई बात नहीं है।'

'आप ज़रूर अमित से चुदवाती हैं ... और ये भी ग़लत बात है।'

मैंने तुरत ही माया को जवाब दिया, 'मैंने कभी नहीं चोदा है भाभी को, तुम्हारी क़सम।'

माया बोली, 'मैं नहीं मानती। भाभी ज़रूर झूठ बोल रही हैं।'

'नहीं माया, अमित ठीक कह रहा है। मैं तो रवि से चुदवाती थी और कल अमित ने मुझे रवि के साथ पकड़ ही लिया। वह तो मुझे ज़रूर चोदता पर उसने अब तक नहीं चोदा है। वह यहाँ घर में हैं यह बात मुझे बिल्कुल नहीं पता थी।'

'सच...?'

'हाँ ये सच है। और ये तो अच्छा ही है ना कि अमित के यहाँ होने से हम दोनों चुदवा कर ख़ुश हो जाएँगी। बोलो माया, मैं ठीक कह रही हूँ ना?'

'लेकिन मैंने तो कभी किसी से भी नहीं चुदवाया है आज तक।'

'देखो, पहली बार कोई लड़की किसी से तो चोदवाती ही है, तो आज तुम्हारी बुर का उद्घाटन भी हो जाएगा।'

'मैं नहीं चोदवाऊँगी, भाभी।'

'अच्छा मुझे चुदवाते तो तू देख सकती है ना?'

'आप चुदवाओ तो मैं ज़रूर देखूँगी। सच कहूँ तो मैं यह देखना चाहती हूँ,' और वह कपड़े पहनने लगी।

यह देख मैंने कहा, 'पर तुम अपने कपड़े क्यों पहनने लगी माया, मैं तुम्हें केवल देखूँगा और सिर्फ़ भाभी को ही चोदूँगा।'

यह सुन कर माया ने कपड़े पहनना बंद कर दिया और बोली, 'ठीक है।'

तब भाभी ने उससे कहा कि वो उनके मुँह के सामने बैठ जाए। माया को थोड़ा आश्चर्य हुआ।

'वो क्यों भाभी?'

'तुम्हारी बुर मैं जब चाट रही थी तो तुम्हें अच्छा लग रहा था या नहीं?'

'हाँ, अच्छा तो लग रहा था।'

'फिर क्या, और मज़ा आएगा। तुम सिर्फ़ मेरे मुँह के पास बैठो। मैं तुम्हारी बुर चाटूँगी और अमित से चुदवाऊँगी।'

इतना कह कर भाभी मेरी तरफ़ मुड़ गईं और मेरे कपड़ों को उन्होंने खोलना शुरू कर दिया। देखते ही देखते मेरे कपड़े मुझसे जुदा हो चुके थे और मैं पूरी तरह उन दोनों की तरह ही नंगा हो चुका था। अब भाभी ने मेरे जाँघिये में हाथ डाल कर मेरे लंड को बाहर निकाला। लंड बाहर निकला तो भाभी आश्चर्य से भर उठी।

वह सिसक कर बोली, 'हाय, इतना बड़ा लंड?'

'हाँ, मेरा लंड है ही ऐसा,' मैंने कहा।

भाभी चुपचाप मेरे लंड को अपने मुँह में भर ली थी और प्यार से उसे चूसना शुरू कर दिया। माया चुपचाप ये सब देख रही थी। तभी मैंने माया को पास बुला लिया और उसे चित लिटा दिया। मैं दरअसल उसकी बुर चाट कर स्वाद लेना चाहता था। माया को बुर चटवाने में कोई प्रॉब्लम नहीं थी और इसलिए उसने अपनी बुर मेरे सामने कर दी। जब मैंने उसकी बुर को चाटा तो वह फिर से सिसकने लगी।

'हाय .. बड़ा मज़ा आ रहा है,' माया ने कहा।

इधर भाभी मेरा लंड चूस रही थी तो उधर मैं माया की बुर को चूस रहा था। फिर हम दोनों एक-दूसरे में लिपट कर प्यार करने लगे। वह मेरे चुंबनों से उत्तेजित हो सिसकियाँ ले कर आहें भरने लगी थी और मैं मज़े ले रहा था। क़सम से ग़ज़ब का मज़ा आ रहा था मुझे। मुझे पता था कि भाभी की बुर की तुलना में माया की बुर कहीं ज़्यादा अच्छी होगी क्योंकि भाभी की बुर तो चुदी-चुदाई थी। इसलिए मैंने माया को और उत्तेजित करने का प्रयास करने लगा। उसकी बुर को चाटते चाटते मैंने अपने हाथ उसकी कठोर चूचियों पर ले जा कर उन्हें भी मसलने शुरू कर दिया। इस दोहरे मज़े से हैरान हो माया एकटक मुझे ही देखने लगी। क्या घायल कर देने वाला नज़ारा था पर मेरा पूरा ध्यान सिर्फ़ माया पर ही था। भाभी के मुँह में फिसलता हुआ अपना लंड भी मुझे नहीं दिख रहा था।

धीरे-धीरे ही सही पर आख़िर में माया पूरी मस्ती में आ ही गई और अब जन्नत का मज़ा लेने लगी थी। वो खुशी से झूम रही थी और बार बार कहती,

'हाय अमित, आह्ह्ह ... सच में मज़ा आ गया मुझे तो ... ऐसा तो मैंने सोचा भी न था।'

इधर भाभी अपने मुँह में लंड को लोल मार-मार कर अंदर बाहर कर रही थी। वह मेरे लंड को लॉली-पॉप की तरह चूस रही थी। हाय .. कभी मैं भी अपने कमर को हिला देता था और मुँह में उनके मेरा पूरा लंड चला जाता था। भाभी ने लंड पर अपने मुँह से वैसा ही दबाव बना रखा था जैसे की चूत में होता है। हाय, मज़ा आ गया था।

मैंने तभी माया की बुर के अंदर अपनी जीभ को घुसा दिया जिससे वह ज़ोर से सिसक उठी। साथ ही साथ मैंने उसकी चूची को भी मसला तो वह मस्ती में आह .. आह .. कराहने करने लगी। तभी लंड को चूसना बंद कर भाभी उठ बैठी और बोली,

'अमित, अब मेरी बुर चोदो ना, हाय प्लीज चोद डालो।'

मैंने भाभी को चित लिटाया तो देखा उनकी बुर से पानी रिस-रिस कर जाँघों पर बह रहा था। मैं झुक कर प्यार से उनकी चूत चाटने लगा। माया सिसकियाँ ले कर चुपचाप देख रही थी। ये देख भाभी ने उसे अपने पास बुलाया। माया आकर भाभी के मुँह के पास बैठ गई और एक बार फिर अपनी बुर चुसवाने लगी। पर अब वह इस खेल को थोड़ा बहुत सीख चुकी थी इसलिए उसने खुद ही झुक कर भाभी की चूचियों को चूसना शुरू कर दिया।

भाभी की बुर से बहते पानी की धार तेज होने लगी थी और जब मैंने अपनी जीभ को भी उनकी बुर में धकेल दिया तो वो पागल सी हो गईं। फिर वो उठ कर बकरी की तरह पोजिसन ले लीं जिससे उनकी गांड और बुर अब मेरे लंड के सामने थे और उनके मुँह के सामने माया की बुर थी जिसे वो फिर से चाटने लगीं।

मैंने अपनी एक उँगली उनकी बुर में डाल कर दो-चार बार अंदर बाहर किया तो भाभी ने अपने पैरों को मोड़ते हुए अपनी गांड और बुर को और ऊँचा उठा दिया ताकि मेरे लंड को ठीक से जाने का रास्ता मिल जाए। क्या दृश्य था ... मेरी स्थिति तो ऐसी थी जैसे बाघ किसी जलाशय में पानी पी रहा हो। हाय, मैं तो एकदम मस्त हो गया इस अद्भुत मज़े से। अब मेरे से और रुक पाना नामुमकिन था।

मैंने अपना लंड भाभी की बुर के सामने कर दिया और बुर के मुहाने पर ला कर जब लंड को रगड़ा तो भाभी माया की चूत छोड़ सिसकारियाँ भरने लगीं। फिर मैंने अपने लंड के सुपाड़े को किसी इंजेक्शन की तरह उनकी तपती चूत के अंदर पेल दिया। हाय, कितनी आसानी से उस भीगी हुई चूत ने मेरे लंड को अपने अंदर ले लिया ये देख मुझे आश्चर्य हुआ। उफ्फ, क्या गर्मी सी लगने लगी चारों ओर से मेरे लंड को ... बयां कर पाना मुश्किल है।

मैंने माया की ओर देखा तो पाया कि वो एकदम से हमारी चुदाई को ही देख रही थी और साथ ही साथ अपनी बुर भी चुसवा रही थी। दोनों मज़े वो एक साथ ले रही थी। जोश में भर कर मैंने एक झटके के साथ अपना पूरा लंड भाभी की बुर के अंदर डाल दिया। उनकी बुर उतनी गीली ना होती तो शायद थोड़ी मुश्किल हुई होती क्योंकि तभी मुझे भाभी के शरीर की तड़प ने ये आभास दिला दिया कि उन्हें दर्द ज़रूर हुआ। पर वो उस दर्द को छिपाने की कोशिश करने लगीं नहीं तो माया घबड़ा जाती और फिर उसे चोद पाना मुश्किल हो जाता। हाय, सच में मेरी भाभी काफ़ी चालाक थी और अपने प्रॉमिस को हर हाल में पूरा करना चाहतीं थीं।

उनके दर्द को कम करने के लिए मैं थोड़ा रुक गया और कमर के नीचे से हाथ ले जा कर उनकी लटकती चूचियों को सहलाने लगा। साथ ही साथ मैं उनकी पीठ भी चूम रहा था। थोड़ी देर बाद जब उनकी

सिसकियाँ नार्मल हुईं तो मैं समझ गया कि अब उन्हें भी कुछ मज़ा आने लगा है और फिर मैंने अपना लंड धीरे-धीरे बुर में पेलना शुरू किया। कुछ देर बाद जब वो मेरे लंड को पूरी तरह एडजस्ट कर लीं तो माया की बुर चूसना छोड़ मेरी ओर मुँह करके बोलीं,

'हाय मेरे राजा, अब जरा और तेज़ी से पेलो ...'

मैं अपने लंड को और तेज़ी के साथ बुर में डालने निकालने लगा। भाभी एक बार फिर माया के साथ भिड़ गईं। वह सिसक सिसक कर माया की बुर चाट रही थी। मैं माया की गीली होती बुर को देख रहा था और भाभी की कमर पकड़ उन्हें तेज़ी से चोद रहा था। बुर के अंदर काफ़ी पानी भर गया था जिससे मुझे तेज़ी से पेलने में अब आसानी हो रही थी। हाय, कितना मज़ा आ रहा था। भाभी गांड उठा-उठा कर अपनी बुर को मेरे लंड की ओर धकेल रही थी जिससे पूरा लंड अंदर घुस जाता था और मेरे बॉल्स उनकी जाँघों से टकरा कर कमरे में एक नई आवाज़ निकाल रहे थे।

अब मैंने उनकी चूचियों को छोड़ सिर्फ़ चोदने में ध्यान लगा दिया। मेरा लंड पूरा बाहर आता और फिर माया को एक झलक सी दिखला कर फिर बुर के अंदर ग़ायब हो जाता। जैसे जैसे भाभी की सिसकियाँ बढ़ती गईं, माया भी ज़ोर से सिसकियाँ लेने लगी। मैं यह देखकर समझ गया कि अब माया आराम से चुदवा लेगी पर भाभी का खेल जल्दी ख़त्म हो ही नहीं रहा था।

'हाय भाभी, मज़ा आ रहा है ना आपको?'

'हाँ अमित, बहुत मज़ा आ रहा है। अब तो, हाय ... , और ज़ोर से चोदो ना, मैं तो ....'

इस तरह उसकाने पर मैंने फुल स्पीड पकड़ ली और पूरा बिस्तर मेरे धक्कों की ताक़त से हिलने लगा। मैं एकदम संतुष्ट हो कर चोद रहा था क्योंकि मेरे पास तो अभी एक बुर और थी।

'हाय अमित, बस चोदते जाओ ... मैं झड़ने वाली हूँ .. हाय .. उफ्फ.. हाय ...'

'सच भाभी....?'

'हाँ राजा, सोचते क्या हो, बस चोदते जाओ ज़ोरों से...' कहते हुए भाभी ने माया की चूचियों को मसलने लगीं।

तभी माया को पता नहीं क्या सुझा कि वो भी अपना हाथ आगे बढ़ा दी और भाभी की चूचियाँ सहलाने लगी। हाय, अब तो वह इतनी मस्त हो चुकी थी कि बहक सी गई थी। इधर भाभी की सिसकियाँ और बढ़ती जा रही थी।

'वाह वाह क्या लंड है ... इतना ज़ोरदार ... हाय ... इसी तरह चोदते रहो अमित .. हाय, बस पेलते जाओ। जमकर चोदो ... हाय पेलो .. प्यार से नहीं, बल्कि ज़ोर से ... आह क्या मज़ा आ रहा है ... मैं तो मर गई रे।'

उन सिसकियों से मैं समझ गया कि भाभी अब झड़ने ही वाली है। इसका मतलब माया की बुर पर आख़िरकार मैं हाथ साफ़ कर सकता हूँ।

मेरी चुदाई से भाभी एकदम खुश हो कर बोली, 'हाय, काश तुम्हारे लंड को मैं पहले भी देख चुकी होती। रवि का लंड जब धक्के मारता था तो पता भी नहीं चलता था मुझे ठीक से। पर तुम्हारा लंड ... हाय .. बिल्कुल सही साइज़ का है .. हाय मेरे देवर जी, क्या चोदा है तुमने आज .. मैं तो बस गई ...'

वह अपने गांड को पीछे धकेलने लगी और बेहाल हो मैं भी गपागप चोदता गया।

'बहुत खूब .. हाय .. मेरे दिलदार देवर जी .. तूने कितना प्यार दिया आज मुझे ... आह्ह्ह्ह्ह ....'

और इसी लंबी सिसकारी के साथ भाभी की गांड हिलनी बंद हो गई। वह अपने दाँतों से माया की चूची को ज़ोर से दबा दी जिससे माया की सिसकारी हलकी चीख में बदल गई। तभी मेरे लंड ने भी जवाब दे दिया और उस रस भरी चूत के अंदर ही मैं भी झड़ गया। मेरा इतना पानी निकला कि मैं सोच में पड़ गया कि अब माया को चोदना संभव भी है या नहीं।

इधर भाभी निढाल हो गई थी। उनकी तो खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था। 'आह आह ..' वह अब भी कर रही थी मगर मुस्कुरा भी रही थी। जैसे ही बुर से मेरा लंड अलग हुआ वो चित होकर गिर पड़ी बिस्तर पर।

'हाय, ऐसा मज़ा तो कभी नहीं मिला था मुझे,' भाभी ने कहा।

माया इस बीच मेरे लंड पर नज़रें गड़ाई हुई थी। मैं थक गया था और बिस्तर पर लेट गया। मैंने माया को चोदने का पूरा प्लान कुछ पलों के लिए दिमाग़ से निकाल दिया था।

तभी माया बोली, 'अमित, क्या हमें तुम नहीं चोदोगे?'

'तुम्हीं तो कह रही थी कि मैं नहीं चुदवाऊँगी। मैं जबरदस्ती क्यों करूँ?'

'हाय राजा, हमें भी चोदो ना प्लीज ... क्या मुझसे नाराज़ हो?'

'नहीं तो, मैं तुमसे क्यूँ नाराज़ होऊँ?' मैंने कहा।

'तो चोदो ना हमें भी ... देखो ना मेरी बुर किस कदर बेचैन है।'

मैंने लेटे लेटे ही अपनी सर माया की तरफ़ घुमाया और उसकी बुर को देखा तो पाया कि सच में बुर के होंठ काँप रहे थे। अंदर का गुलाबी रंग होंठों के फैल जाने से बाहर तक आसानी से झलक रहा था। उस एक झलक ने मुझे बेचैन कर के रख दिया। हाय क्या बुर थी वो, कोरी और नाजुक सी। मैं उन्हें चूमने को तड़प उठा।

तभी भाभी बोलीं, 'नहीं अमित, मत चोदो इसे। साली पहले तो ना-नुकुर कर रही थी।'

'भाभी क्या कह रही हो आप...?'

'कहती थी कि नहीं चुदवाऊँगी, नहीं चुदवाऊँगी ... अब क्या हो गया?'

'हाय भाभी, जो कहना है कह दो पर हमें अपने देवर से चोदवा दो .. एक बार, बस एक बार।'

मैं उसकी बेताबी पर तरस खा रहा था पर भाभी ने चुपके से मुझे आँख मारी तो मैं समझ गया कि यह हाव-भाव क्यों अपनाया है भाभी ने और मैं चुप ही रहा। अब तक तो मेरा थका हुआ लंड भी झुकने लगा था।

भाभी ने माया से कहा, 'चलो, अमित के लंड को प्यार करो। फिर अमित चोदेगा।'

माया उठी और मेरे पास आई। वह मेरे ऊपर घुटने मोड़ कर बैठ गई और मेरे लंड को मुँह में ले लिया। जैसे उसने भाभी को चूसते देखा था उसी अंदाज में वो लंड चूसने की कोशिश कर रही थी। तभी भाभी उठी और उन्होंने अपनी बुर मेरे मुँह के सामने कर दी। उनकी बुर से रज और वीर्य का मिला-जुला मिश्रण टपक रहा था। मैं उनकी मादक बुर को चाट चाट कर साफ़ करने लगा। वैसे मैं समझ गया था कि भाभी कि ये भाभी का स्वार्थीपन है वर्ना वो तो चुदवा कर ही खुश थी। अगर उनका बस चलता तो माया को भगा ही देती।

माया मेरे लंड को गपागप अपने मुँह में ले रही थी। जितना ज़्यादा लंड वो ले पा रही थी उतना वो पूरी लगन से चूस रही थी। उसकी इस मेहनत के कारण मेरा लंड एक बार फिर कड़ा होने लगा पर मैं अब भी आराम से भाभी की बुर को साफ़ करने में ही लगा रहा।

पर लंड के बढ़ते तनाव को ज़्यादा देर सह नहीं पाया और भाभी को अपने ऊपर से हटा माया को भी ज़्यादा चूसने से मना कर दिया। मेरा लंड पूरी तरह मस्त हो चुका था। वो तो अब पहले से भी ज़्यादा ताज़गी से भर उठा था और इतना बावला हो गया था कि किसी भी बुर की मस्ती को चोद कर निकाल सकता था।

मेरे कहने के अनुसार माया चित लेट गई थी और उसने अपनी टाँगें फैला दी थीं। भाभी भी उठ कर माया के बगल में बैठ गई। मैंने माया की बुर को चूमा तो वह एकदम से सिसक उठी। जब मैंने और ज़ोर से बुर की फ़ाँकों को चूसा तो वो काँप गई। मैंने चूसना जारी रखा ताकि माया इतनी मस्त और बेहाल हो जाए कि खुद को चुदवाने के लिए छटपटाने लगे। और वही हुआ ...

मैं जब उसकी बुर के अंदर अपना लंड बहुत हलके से धकेला तो वह मस्ती से काँप उठी। भाभी को मिले आनंद की कल्पना में उसका मन भी शायद ग़ोते लगा रहा था और इसलिए उसकी बुर से पानी रिसना शुरू हो गया था। उसकी बेचैनी इतनी बढ़ गई थी कि वह स्वयं ही अपनी चूचियों को हाथों से मसल रही थी और अपने होंठ दातों से काट रही थी।

तभी मैं आहें भर कर मस्ती से बोला, 'हाय माया, क्या चोद दूँ तुम्हें अब?'

'हाँ मेरे राजा, जल्दी चोदो हमें ... हमारी बुर में अजीब सी खुजली हो रही है जो मैं सह नहीं पा रही हूँ।'

तब मैं माया की बेशरमी पर हँस पड़ा और उसकी बुर के पास तकिया लाकर गांड के नीचे लगा दिया। उसकी मस्ती ने मुझे भी निहाल कर दिया था। फिर मैंने अपने लंड को चूत की फ़ाँकों के बीच कुछ देर रगड़ा तो मस्त हो माया अपने चूतड़ उछालने लगी। चूतड़ उछाल कर वह लंड अपने अंदर लेना चाहती थी पर लंड ऐसे तो कोरी बुर में जाने से रहा सो वो फिसल कर उसकी पेट पर आ गया।

माया बोली, 'धत तेरे की, अमित तुमही चोदो ना मुझे अपनी भाभी की तरह ... हाय क्यों देर कर रहे हो?'

मैं जानता था कि जितना ये मचल रही है अभी उतना ही बाद में चिल्लाएगी, पर इससे मुझे क्या? मुझे तो चोदना था। सो मैंने बुर के मुँह में लंड के सुपाड़े को फँसाया और ज़ोर से धक्का मारा। मेरा धक्का इतना ज़ोरदार था कि बुर से निकलते पानी की चिकनाई की वजह से वो आधा अंदर चला गया। माया सिसक उठी और उसका बदन दर्द से मचलने लगा पर तब तक मैंने दूसरा धक्का भी दे दिया। वह एकदम से कराह उठी और ज़ोरों से रो पड़ी। उसने अपने हाथों से मेरी जाँघ पकड़ी और मुझे पीछे की ओर धकेल कर लंड निकालने की कोशिश करने लगी।

तब मैंने उसकी बुर में अपने लंड को और चाँप दिया और साथ ही साथ उसकी चूचियों पर झुक गया। मैं उसकी चूचियों को पहली बार छू रहा था। एक चूची को दबाते हुए दूसरी को मैं चूसने लगा। इस बीच भाभी ने अपना मुँह मेरे लंड और माया की चूत के संगम स्थल पर ले जा कर वहाँ जीभ से चाटने लगी ताकि माया को कुछ राहत मिल सके।

मैं धीरे-धीरे मस्ती में खिल रही माया को देख रहा था।

माया धीरे-धीरे मस्त हो रही थी। उसकी जवानी खिल रही थी। हाय, मैं भी मस्त हो उठा था। उसकी जवानी को देखकर मैं भी एकदम गद्‌गद हो गया। वह अब धीरे-धीरे अपनी गांड को फुदका रही थी। तभी मैंने हलकी चुदाई शुरू कर दी।

मैंने पूछा, 'बोलो माया, अब कैसा लग रहा है।'

'हाय, अच्छा लग रहा है ... आह चोदो अब .. धीरे धीरे .. हाय चोदो ना...'

मैं अब उसकी चूची को बदलकर चूसते हुए तथा दूसरी को दबा कर चोदने लगा। कुछ देर में लंड अंदर जाने में और आसानी हो गई तो खुद ही मेरी रफ़्तार बढ़ गई। भाभी अब भी अंदर-बाहर होते लंड को चाट रही थी जिससे मेरा मज़ा दुगना हो गया। माया के हाथ का बंधन मेरी पीठ पर कसता जा रहा था।

हाय, तब माया एकदम से सिसक उठी थी। वह एकदम बेहाल हो उठी थी। मेरा लंड अब और तेज़ी से अंदर-बाहर हो रहा था। मैंने माया की चूचियों को छोड़ दिया था और उसकी कमर को पकड़ लिया।

'वाह अमित, हाय, मज़ा आ गया ... वाह क्या चोद रहे हो हमें .. हाय बस इसी तरह चोदो हमें .. आह .. आह ...'

वह मस्ती में अपनी गांड को उछाल कर बोल रही थी।

मैं अब उसकी कमर को पकड़ कर अंधाधुंध धक्का मारने लगा था। वह मेरे हर धक्के पर सिसक उठती थी। वह एकदम से बेहाल हो उठी थी। हर धक्के पर सिसक उठती थी। अंदर घुसते लंड का पूरा साथ देने के लिए अपनी गांड भी उठा देती थी। भाभी की जीभ का बुर पर स्पर्श उसे और बेहाल कर रहा था।

तभी वह बड़बड़ाने लगी। मैं समझ गया कि वह झड़ने वाली है। उसकी पकड़ मेरे ऊपर अब काफ़ी सख़्त हो गई थी। मैं और तेज़ी से चोदने लगा कि तभी वह सचमुच में झड़ने लगी। मेरा चोदना अब भी जारी था क्योंकि मेरा पानी अभी तक निकला नहीं था। पर मेरे कुछ धक्कों के बाद उसने मुझे अपने पर से ढकेल कर हटा दिया।

पर मैं अब भी चोदना चाहता था। उस वक्त भाभी नीचे थी। मैंने भाभी को ही चित लिटा दिया और उनकी बुर के बजाय इस बार उनकी गांड में अपना लंड पेल दिया।

और चुदाई फिर शुरू हो गई ....

(**समाप्त**)